परिवार की उपेक्षा एक हनिकारक कदम सामाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

डा0 अनीता बाजपेयी

एसोसिएट प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

श्री जय नारायणन पी.जी. कॉलेज लखनऊ।

उत्तर आधुनिक समाज में संचार एवं सूचना क्रान्ति का बाजार गर्म है। ऐसे मे परिवार हमारे लिये कितना आवश्यक है, उसकी क्या उपयोगिता है, क्या उपादेयता है। इसकी चर्चा इस लेख के अर्न्तगत की गयी है। समाज के तौर तरीके को सीखने की प्रक्रिया या समाजीकरण की शुरूआत में होती है।परिवार नातेदारी के आधार पर निर्मित एक समूह है जिसमें नवजात शिशु का लालन पालन होता है, और उस दौरान उसे अपने समूह में मान्य व्यवहार के विन्यासों को सीखने का अवसर मिलता है। परिवार चाहे एकल हो या संयुक्त उसकी छत्रछाया में परिवार के सदस्यों को रहने की जगह मिलती है खाने को भोजन मिलता है, बड़ों से प्यार एवं आशीर्वाद मिलता है, छोटों से आदर। परिवार में प्यार के साथ अनुशासन एवं नियंत्रण भी होता है। काम करने की आदतें विशेष कौशल सीखने का वातावरण मिलता है। परिवार की संरचना उसकी निरन्तरता एवं स्थायित्व की तह में नातों रिश्तां का ताना बाना ही वह महत्वपूर्ण आधार है जिससे सामाजिक संरचना का संगोपांग गठन होता है। परिवार सभी सामाजिक समहों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और व्यापक समूह है। इस समूह के अभाव में मानव समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। बड़े–छोटे,आदिम या सभ्य संख्या पुरातन या आधुनिक या उत्तर आधुनिक सभी समाजों में प्रजनन और बच्चों के पालन पोषण हेतु परिवार रूपी समूह की आवयश्यकता होती है। किसी न किसी रूप में यह सभी समाजों में पाया जाता रहा हैं जैसे पश्चिम के देशों में मूल परिवार या दाम्पत्य परिवार (Nuclear Family or Conjugal Family) की प्रधानता है तो भारतीय गांवों में संयुक्त परिवार या विस्तृत परिवार (Extended Family) की। प्रसिद्ध समाजशास्त्री एवं समाजशास्त्र के जनक कहे जाने वाले ऑगस्त काम्ट (Auguste Comte)ने परिवार को समाज की आधार भूत इकाइ कहा है। जैविक दृष्टि से परिवार एक वैसा समूह है जिसमें स्त्री एवं पुरूष को यौन सम्बन्ध एवं संतान उत्पत्ति के लिये समाज की स्वीकृति प्राप्त होती हैं समाजशास्त्रीय दृष्टि से परिवार स्त्री पुरूष का ऐसा समूह हैं जो विवाह सम्बंधों, या गोद लेने की व्यवस्था से निर्मित होात है। परिवार के सदस्यों के बीच के सम्बन्ध को समाजशास्त्र एवं मानवशस्त्र के क्षेत्र में इस चित्र द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

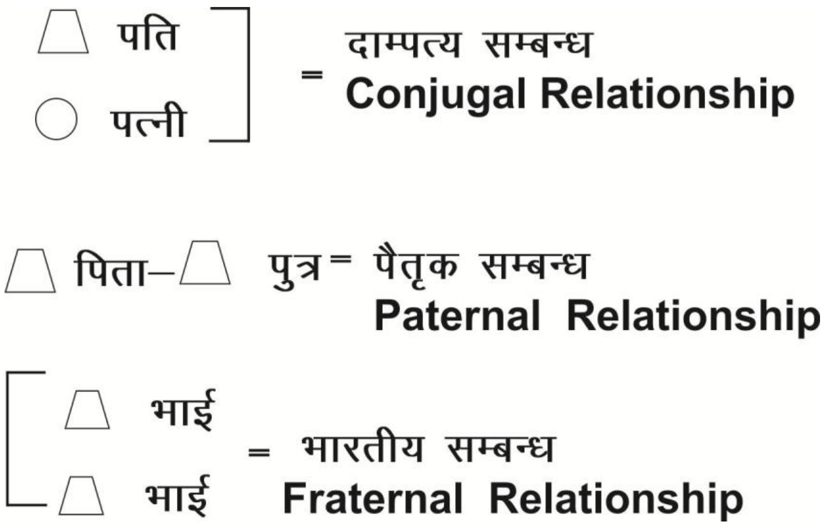

अब हम परिवार की कुछ विशेषताओं के आधार पर इसका स्वरूप स्पष्ट करेंगे। जो इस प्रकार है।

1. **सर्वव्यापकता:–** जी.पी. मुरडॉक अमेरिकन मानवशास्त्री ने विश्व के 250 आदिम जातीय समाजो के अध्ययन पर तर्क दिया है की परिवार एक विश्वव्यापी सामाजिक व्यवस्था है। उन्होने अपनी पुस्तक (Social structure 1949)में बताया कि प्रत्येक समाज में परिवार के चार बुनियादी प्रकार्य है जो समाज के अस्तित्व को बनाये रखने में महत्वपुर्ण योगदान देते है– यौन व्यवहार या नियंत्रण, प्रजनन, परिवार के सदस्यों को अर्थिक सहयोग, और शिक्षा (समजीकरण) इन्ही बुनियादी प्रकार्यों के कारण परिवार एक विश्वव्यापी सामाजिक व्यवस्था है।

2. **सीमित आकार (Limited Size)** :–परिवार का आकार सीमित होता चाहे वह छोटा परिवार हो, या बड़ा। परम्परागत भारतीय संयुक्त परिवार का आकार बड़ा होता था। लेकिन आधुनिक समय में इसका आकार भी समिति हो गया है। परिवार का आकार किसी बड़े समूह या सीमित जैसा असीमित नहीं होता और न ही एक व्यक्ति से परिवार का निर्माण होता है।

3. **भावनात्मक आधार:–** पीरिवार के सभी सदस्य भावनात्मक आधार पर एक दूसरे से बंधे होते हैं। एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना होती है। और यही भारतीय संस्कृति की पहचान होती है। यह आपसी प्रेम एवं सहयोग का प्रमाण है। जब भावना का आकार तर्क विमर्श लेने लगता है तो त्याग की भावना कम होने लगती है और परिवार का मूल स्वरूप बिगड़ने लगता है।

4. **सामान्य निवास:– (साझा निवास)** परिवार की विशेषता है कि सभी सदस्य एक साथ निवास करते हो कम से कम पति पत्नी एवं बच्चे। जब परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ने लगती है तो साझाा निवास की कठिनाई स्वभाविक है,ऐसी स्थिति में परिवार के सदस्य आपसी सहमति से अस्थायी आवास अलग बना लेते है। लेकिन परिवार केसदस्य एक दूसरे के प्रति परिवारिक भावना से जुड़े रहते है।

5. **रचनात्मक प्रभाव:–** परिवार अपने सदस्यों से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा रखता है जो सभी

को स्वीकार्य हो। तानाशाही रवैया परिवार के स्थायित्व के लिये हमेशा घातक होता है। परिवार अपने सदस्यों के व्यक्तित्व की नींव का निर्माण करता है। हम सब कुछ परिवार के अन्दर ही सीखते है। परिवार का परिवेश व्यक्ति के ऊपर दिखाई पड़ता है, व्यक्ति के आचर विचार से परिवार के आचार–विचार का पता लगाया जा सकता है इस लिये कहा गया है कि –

जेस जेकर माईवाप वसवकर लरिका।

जेस जेकर घर दुआर वसवकर खरिका।।

अर्थात बच्चों के संस्कार को देखकर मां बाप के संस्कार का अन्दाजा लगाया जा सकता है। और बैठका या दरवाजा देखकर घर के आन्तरिक हिस्से का आन्दजा लगाया जा सकता है। चार्ल्स कूले ने भी परिवार को सामाजीकरण एवं नियंत्रण का प्रमुख आधार माना है। व्यक्ति के जीवना में परिवार एक ऐसा स्थल है जहाँ संस्कृति का हस्तांतरण होता है।

6. **यौन सम्बन्ध का नियमनः**–परिवार विवाह के माध्यम से यौन सम्बंध को वैघता का रूप प्रदान करता है। परिवार के अन्तर्गत स्त्री एवं पुरूष के मध्य यौन सम्बन्ध स्थापित होता है।

परिवार यह निर्धारित करता है कि कौन व्यक्ति किस स्त्री के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करेगा। परिवार ही यौन सम्बन्ध को नियमित बनाता है। इसके अभाव में समाज में अनाचार की बाढ़ आ जायेगी जो सामाजिक विखण्डन का द्योतक है।

7. **परिवार निर्माण का आधार विवाह एवं रक्तः**–परिवार निर्माण का मुख्य आधार विवाह है। विवाह या रक्त के आधार पर ही सदस्य परिवार से जुड़ते है। इसीलिए **विलियम जे गुडे ने परिवार के सम्बंध में कहा है कि** “ Each person is kinsman to many" अर्थात दो या तीन व्यक्तियों के एक साथ रहने मात्र से परिवार का निर्माण नहीं होता है।

परिवार के सन्दर्भ में कुछ महत्वपूर्ण अवधारणायें

1.मूल परिवार (एकल परिवार) :– आकार और संगठन की दृष्टि से मूल परिवार सबसे छोटा होता है। यह पति पत्नी और उन पर आश्रित बच्चों के योग से निर्मित होता है इन पविारों के अन्दर गहरी अन्तः क्रिया होती हैं।इसीलिए विचारों, भावों तथा क्रियाओं आदान प्रदान उन्ही के बीच सीमित रहता है।। ऐसे परिवारों में बच्चे वयस्क होते ही अपना पृथक मूल परिवार का निर्माण कर लेते है। पश्चिमी देशों में परिवार का यही स्वरूप प्रारम्भ से प्रचलन में रहा है। लेकिन आजकल भारती समाज में इस तरह के परिवार का प्रचलनन बढ़ गया है। इसे दाम्पत्य परिवार भी कहा जाता है। इसमें अधिक से अधिक दो ही पीढी के लोग रहते है। इस रेखा चित्र के माध्यम से इसे समझा जा सकता है।

मूल परिवार के भेदभाव :

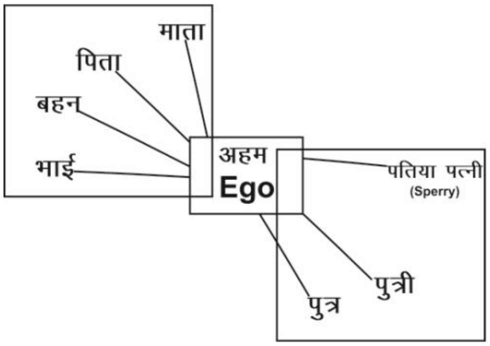

प्रजनन परिवार

8. **संयुक्त परिवार :–** संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियों के लोग एक साथ निवास करते है, खाना खाते है, व्यापार करते है, और परस्पर रक्त सम्बन्धों से बंधे होते है। यहां पर पीढीयों के अन्दर गहराई होनी चाहिये। पराम्परगत भारतीय समाज में यही व्यवस्था प्रचलन में थी। ऐसे परिवार में दादा, दादी, चाचा चाची, तथा चचेरे भाई बहनों जैसे कई पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते है। संयुक्त परिवार की पूरी सत्ता परिवार के मुखिया में केन्द्रित होती हैं। इस अर्थ में यदि देख जाये तो भारतीय संयुक्त परिवार एक निरंकुश संरचना है।

9. **न्यासिता परिवारः–**इसमें व्यक्तिगत स्वार्थ का कोई महत्व नहीं होता बल्कि समस्त परिवार का स्वार्थ सर्वोपरि होता है। न्यासिता परिवार में उसके सदस्यों की स्थिति एक न्यास की होती है। परिवार के हित की जिम्मेदारी सभी सदस्यों पर होती है। बदलते परिवेश में परिवार का महत्व घट रहा है उसकी संरचना एवं कार्यों में तबदीली हो रही है परिवार जैसी संस्था के भविष्य पर संकट के बदल है। सवाल यह है कि यदि परिवार समाप्त हो जायेगा, तो समाज का क्या होगा? हम परिवार मुक्त समाज बचाव करना चाहते है। बच्चे जो दादा दादी के साथ खेलने से उनसे संस्कार सीखते थे। अब वे मोबाइल फोन टी.वी0. कम्प्यूटर से खेलेंगे यही उनकी दुनिया होगी जिन्दगी पूरी तरह से यान्त्रीकरकृत हो जायेगी। अभी हाल के दिनों में हरियाणा के एक बच्चे ने मोबाइल फोन न मिलने के कारण अपने हाथ नश काट ली थी। और आत्महत्या करने का प्रयास किया। उसकी जिंदगही मोबाइल फोन के इर्दगिर्द ही सिमट गयी थी। क्योंकि परिवार का कोई सदस्य उसकी देखभाल के लिए नहीं समझ आरहा था। आज मूल परिवार में भी बच्चों के पास फोन और टी.वी. के अलवा मोहल्ले के बच्चों के साथ खेलने के लिये वक्त नही लोगों का अभाव है। हैं । परिवार के पतन के बाद मोहल्ले की संस्कृति अपने आप खत्म हो जायेगी । मूल परिवार में यदि माता–पिता दोनों नौकरी पेशे में है, तो वहां बच्चा फोन के सहारे ही जिदंगी काटता है। बच्चों से बात करने के लिए उन्हे सीख देने के लिए घर में लोगों का होना आवश्यक हैं। पश्चिमी समाज भी आज परिवार के हिमायती होते जा रहे है। दादा,दादी नाना, नानी, बाकी बुआ ताऊ, फूफा, इनकी सभी को आवश्यकता है। इनकी उपस्थिति के बिना सभी संस्कार अनुष्ठान अधूरे रहते है। विकास की इस पौड़ में हम जरूर शामिल हो लेकिन परिवार के साथ शामिल ही परिवार की कीमत पर जो विकास किया जायेगा वह आर्थिक तो हो सकता है। लेकिन सामाजिक और सतत नहीं। अतः हम सभी को देर सवेर परिवार के मूल स्वरूप की ओर वापस आना ही होगा। ऐसा मेरा मानना है। हमे परिवार मुलतः समाज से बचना होगा अन्यथा समाज के लिये एक

हानिकारक कदम होगा। परिवार आज नहीं तो कल समाज की मांग बनेगा।

सन्दर्भ

- सामजशास्त्र – जे.पी सिंह
- भारत में परिवार – शोभिता जैन
- विवाह और नातेदारी।
- दैनिक जागरण समाचार पत्र।

Copyright © 2017, Dr. Anita Bajpayee. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.